सर्दियों में पशुधन का प्रभावी प्रबंधन

जय प्रकाश[1] और **डी.के. राणा**[2]

"सर्दी का मौसम डेरी पशु पालकों के लिए एक अनोखी चुनौती प्रस्तुत करता है, जो सीधे तौर पर पशुधन की उत्पादकता को प्रभावित करती है। ठंडा तापमान, नमीयुक्त वातावरण और चारे की सीमित उपलब्धता के कारण पशु झुंड के स्वास्थ्य एवं उत्पादन को बनाए रखने के लिए विशेष और सावधानीपूर्वक प्रबंधन की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे सर्दी बढ़ती है और तापमान गिरता है, डेरी पशु पालकों के सामने अपने पशुओं को ठंड के प्रतिकूल प्रभावों से सुरक्षित रखने की चुनौती और भी गंभीर हो जाती है। यदि उचित देखभाल न की जाए, तो इससे दूध उत्पादन में कमी, रोगों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि तथा गंभीर परिस्थितियों में पशुओं की मृत्यु तक हो सकती है। पशुधन को अपने शरीर का सामान्य तापमान लगभग 101-102 डिग्री बनाए रखने के लिए अतिरिक्त ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है, जो सर्दी में एक बड़ी चुनौती बन जाती है। हालांकि, यदि प्रभावी प्रबंधन रणनीतियां अपनाई जाएं, तो डेरी किसान न केवल अपने पशुओं की भलाई सुनिश्चित कर सकते हैं, बल्कि पूरे सर्दी के मौसम में इष्टतम दूध उत्पादन भी बनाए रख सकते हैं।"

भारत के कुछ राज्यों में सर्दी के दौरान चरम मौसम की स्थिति देखने को मिलती है, जब तापमान सामान्य से काफी नीचे चला जाता है। ऐसी प्रतिकूल मौसमीय परिस्थितियों में न केवल पशु, बल्कि मानव भी अपने सामान्य शारीरिक कार्यों को सुचारू रूप से नहीं कर पाते। वर्तमान में दिल्ली क्षेत्र सहित उत्तर भारत के कई हिस्सों में तापमान में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है, जो दिसंबर से फरवरी के दौरान अपने चरम पर होती है। इस प्रकार की कठोर जलवायु परिस्थितियों में पशुधन, विशेषकर स्तनपान करवाने वाले एवं गर्भवती पशुओं का समुचित प्रबंधन करना डेरी पशु पालकों के लिए एक बड़ी चुनौती बन जाता है।

[1]वैज्ञानिक, पशुपालन; [2]अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, नई दिल्ली

आश्रय प्रबंधन

प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों से पशुधन को सुरक्षित रखने में आश्रय प्रबंधन एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे स्थानीय स्तर पर आसानी से उपलब्ध सामग्रियों जैसे-बांस, ताड़पत्र, सूखी घास, धान का पुआल, गिनी बैग एवं जूट बैग आदि का उपयोग करके प्रभावी रूप से अपनाया जा सकता है। सर्दी के मौसम में धूप की उपलब्धता सीमित रहती है तथा अधिकांश समय बादल और कोहरा छाया रहता है, जिससे पशुओं को अतिरिक्त ठंड का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में यह विशेष रूप से ध्यान रखना आवश्यक है कि शेड का फर्श गीला न रहे, जल निकासी प्रणाली मानक और सुचारू हो तथा स्वच्छता बनाए रखने के लिए शेड की दिन में कम से कम तीन बार सफाई की जाए। सर्दियों के दौरान पशुओं में निमोनिया, बुखार एवं दस्त जैसे रोग सामान्य रूप से देखने को मिलते हैं, जिनके गंभीर होने पर मृत्यु की आशंका भी बनी रहती है।

सर्दियों में बछड़ों की देखभाल से बेहतर वृद्धि

बिछावन

फर्श के साथ सीधे संपर्क में रहने से पशुधन के शरीर के तापमान की हानि

अधिक होती है। ठंडी जलवायु परिस्थितियों में पशुओं को गर्म और आरामदायक बनाए रखने के लिए उपयुक्त बिछावन (भूसा) का प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। बड़े पशुधन के लिए 4-6 इंच तथा छोटे पशुधन के लिए लगभग 2 इंच गहराई तक बिछावन बिछाने की सलाह दी जाती है।

बिछावन के रूप में धान का पुआल, सूखी घास, गेहूं का भूसा आदि सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में पशुधन को ठंड से बचाने के लिए विभिन्न व्यावसायिक बिछावन सामग्री भी उपलब्ध हैं, जो प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों से अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करती हैं।

साथ ही, शेड एवं शालिका को स्वच्छ बनाए रखने के लिए उचित वेंटिलेशन भी आवश्यक है, जिससे शेड में उत्पन्न अमोनिया जैसी हानिकारक गैसों का निष्कासन हो सके और पशुधन का स्वास्थ्य सुरक्षित रहे।

व्यक्तिगत स्वच्छता एवं पोषण

पशुओं की नियमित रूप से नरम कपड़े या ब्रश की सहायता से सफाई करनी चाहिए, जिससे त्वचा स्वच्छ रहे और रक्त संचार में सुधार हो। शीत ऋतु के दौरान पशुओं के बाल नहीं काटने चाहिए तथा ठंडे पानी से स्नान करवाने से बचना चाहिए। इससे शरीर का तापमान तेजी से गिर सकता है। सर्दियों के मौसम में जब पर्यावरणीय तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से घटकर 5 डिग्री सेल्सियस या उससे कम हो जाता है, तब पशुधन के सामान्य शारीरिक कार्यों को बनाए रखने के लिए शरीर का आंतरिक तापमान लगभग 101-102 डिग्री फारेनहाइट तक स्थिर रहना आवश्यक होता है। इस तापमान को बनाए रखने के लिए पशुओं के आहार में अतिरिक्त ऊर्जा एवं प्रोटीन की आवश्यकता होती है। अत: सर्दियों में संतुलित एवं पोषक आहार के साथ ऊर्जा और प्रोटीन युक्त पूरकों का समुचित समावेशन करना चाहिए।

बकरियों के लिए गर्म आश्रय जरूरी

आहार प्रबंधन

ठंड के मौसम की स्थिति से निपटने के लिए पशु अपनी हृदय गति और श्वसन को बढ़ाकर शरीर में गर्मी उत्पादन करते हैं। इससे रक्त प्रवाह बढ़ता है और पशु को ठंड से बचाता है। पशुओं को अपने शरीर की स्थिति और दूध उत्पादन को बनाए रखने के लिए अधिक आहार की आवश्यकता होती है। ठंड के मौसम में मवेशियों और भैंसों को 20 प्रतिशत अधिक चारे की आवश्यकता हो सकती है। सर्दियों के मौसम के दौरान पशुधन शरीर में अधिक गर्मी के उत्पादन के लिए सामान्य से 10 से 30 प्रतिशत अधिक आहार का उपभोग करते हैं। इस महत्वपूर्ण समय के दौरान पशुओं को पौष्टिक और संतुलित आहार प्रदान किया जाना चाहिए, जैसे-बरसीम, विभिन्न प्रकार की खली जैसे-बिनौला, सरसों की खली, मूंगफली की खली और सोयाबीन प्रोटीन से भरपूर होते हैं। ठंडे तापमान से निपटने के लिए पशुधन में बालों का आवरण (मुख्य रूप से गायों में) उन्हें ठंड रोकने में मदद करता है और अपने शरीर में गर्मी का उत्पादन बढ़ाते हैं। वे अपनी हृदय गति और श्वसन को बढ़ाकर इसे पूरा करते हैं। इस प्रकार अपने चरम सीमाओं को ठंड से बचाने के लिए रक्त प्रवाह में वृद्धि करते हैं। यद्यपि यह शारीरिक प्रतिक्रिया पशुधन को सापेक्ष आराम में बेहद कम तापमान का सामना करने में सक्षम बनाती है, लेकिन उन्हें अपने शरीर के वजन और दूध उत्पादन को बनाए रखने के लिए अधिक गुणवत्तायुक्त आहार की भी आवश्यकता होती है। पशुओं को हाइड्रेटेड रखने के लिए साफ और गुनगुना ताजा पानी भी उपलब्ध करवाया जाना चाहिए। शीतकालीन प्रबंधन के लिए सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा पर्याप्त मात्रा में आहार और पानी प्रदान करना है। अधिक गर्मी के उत्पादन के लिए खनिज मिश्रण सांद्रित करें। अधिक गर्मी उत्पन्न करने के लिए आहार में वसा या तेल और गुड़ का मिश्रण बढ़ाएं। यह समय पशुओं के कृमिनाशक और एफएमडी, रक्तस्रावी सेप्टीसीमिया, एंटरोटॉक्सिमिया, ब्लैक क्वार्टर आदि के खिलाफ टीका लगाने का सही समय है और यह सुनिश्चित करें।

अत्यधिक ठंड की परिस्थितियों में छोटे पशुधन का प्रबंधन

नवजात बछड़े खुले आश्रय में अपने शरीर के तापमान को प्रभावी रूप से नियंत्रित नहीं कर पाते, इसलिए उनके प्रबंधन में विशेष सावधानी आवश्यक है। उन्हें गर्म एवं सूखा रखने के लिए पुआल जैसे-सूखे, कार्बनिक पदार्थों से बने बिछावन का उपयोग किया जाना चाहिए। यह शरीर से होने वाली ऊष्मा हानि को कम करता है। इसके विपरीत, रेत जैसी-अकार्बनिक बिस्तर सामग्री ऊष्मा को अवशोषित कर लेती है, जिससे शरीर का तापमान तेजी से गिरने की समस्या उत्पन्न हो सकती है।

बकरियों, बछड़ों एवं अन्य छोटे पशुधन को ठंड से अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करने के लिए साफ और सूखे कंबल या बोरी का उपयोग लाभकारी होता है। अत्यधिक ठंड में बकरियां अपने शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए सामान्य से अधिक चारा ग्रहण करती हैं। अत: उनकी शारीरिक स्थिति को बनाए रखने हेतु उच्च गुणवत्ता वाली घास के साथ-साथ अन्न, जौ, गेहूं, जई आदि अनाज आहार में शामिल करना चाहिए।

छोटे पशु के लिए विशेष प्रबंधन आवश्यक

नवजात बछड़े की थर्मल न्यूट्रल रेंज लगभग 50 से 78 डिग्री फारेनहाइट के बीच होती है, हालांकि यह हवा की गति, नमी, बालों की मोटाई तथा बिछावन की गुणवत्ता जैसे कारकों पर भी निर्भर करती है। जन्म के 1-2 घंटे के भीतर नवजात को अनिवार्य रूप से कोलोस्ट्रम (मां का प्रारंभिक दूध) पिलाना चाहिए। कोलोस्ट्रम में उपस्थित इम्युनोग्लोबुलिन नवजात की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं तथा इसके गुणों के कारण पहला मल (म्यूकोनियम) आसानी से बाहर निकल जाता है।

सर्दियों के मौसम में स्वस्थ एवं उत्पादक पशुपालन सुनिश्चित करने के लिए उपर्युक्त प्रबंधन उपायों का पालन अत्यंत आवश्यक है। ■